कण्वो घौरः। पूषा। गायत्री।

सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात्। सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः॥ १ ॥०४२ ॥०१

विमुचो नपात्- विमुक्तिज। नपात् प्रजेति यास्कः। पूषन्- पोषक सूर्य। सूर्य आत्मा। अंहः- पाप्मानं विघ्नभूतम्। वि तिर- विनाशय। अध्वनः- परमार्थसत्यमभिलक्ष्य स्थितं मार्गम्। सम्- सम्यक्। तिर- तारय। परमार्थसत्यं प्रापयेति भावः। देव- द्योतनशील। नः- अस्माकम्। पुरः- पुरतः। सक्ष्व- मार्गदर्शनाय मार्गं सेवस्व। षच सेवने ॥१॥

यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेशति। अप स्म तं पथो जहि॥ १ ॥०४२ ॥०२

पूषन्- पोषक सूर्य। यः। दुःशेवः- दुःसेव्यः। वृकः- अस्मत्संपदामादाता। वृक आदाने। अघः- पापः। नः- अस्मान्। आदिदेशति- दुर्मार्गे गमनं प्रति आज्ञापयति। दिश अतिसर्जने। तम्। पथः- मार्गात्। अप जहि ॥२॥

अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम्। दूरमधि स्रुतेरज॥ १ ॥०४२ ॥०३

मुषीवानम्- स्तेनम्। मुष स्तेये। हुरश्चितम्- कुटिलचेतनम्। हुर्छा कौटिल्ये। परिपन्थिनम्- मार्गप्रतिबन्धकम्। त्यम्- तम्। स्रुतेः- परमार्थसत्यप्रापकमार्गात्। स्रु गतौ। अधि दूरम्। अप अज- अपगमय। अज गतिक्षेपणयोः ॥३॥

त्वं तस्य द्वयाविनोऽघशंसस्य कस्य चित्। पदाभि तिष्ठ तपुषिम्॥ १ ॥०४२ ॥०४

तस्य- अस्य। द्वयाविनः- सुखदुःखादिद्वन्द्वमेव परमार्थं मन्वानस्य। अघशंसस्य- पापशंसिनः। कस्य चित्। तपुषिम्- रचितं विघ्नरूपं सन्तापम्। त्वम्। पदा अभितिष्ठ- आक्रम ॥४॥

Dr. Rangani

आ तत्ते दस्र मन्तुम पूषन्नवो वृणीमहे। येन पितॄनचोदयः॥ १ ॥०४२ ॥०५

मन्तुमः- मननशील। ज्ञानिन्। अवबोधक। मन ज्ञाने। मनु अवबोधने। दस्र- दर्शनीय। पूषन्। येन- येन रक्षणेन। पितॄन्- अस्माकं मार्गदर्शिनः। पुरा। अचोदयः- अस्मिन् मार्गे गन्तुं चोदितवान्। तत्। ते। अवः। आ- सर्वतः। वृणीमहे- प्रार्थयामहे ॥५॥

अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम। धनानि सुषणा कृधि॥ १ ॥०४२ ॥०६

अध- अथ। विश्वसौभग- सर्वेषां सौभाग्यदायक। सौभाग्यभूत वा। हिरण्यवाशीमत्तम- सुवर्णायुधसंपन्न। नः- अस्माकम्। धनानि। सुषणा- दानार्हाणि। षण संभक्तौ। कृधि- कुरु। अस्मान् दानाय चोदयेति भावः ॥६॥

अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु। पूषन्निह क्रतुं विदः॥ १ ॥०४२ ॥०७

नः- अस्माकम्। सश्चतः- सहगन्तॄन्। षस्ज गतौ। अति नय- तारय। नः- अस्मांश्च। सुगा- सुगम्येन। सुपथा- शोभनमार्गेण। कृणु- संपन्नान् कुरु। पूषन्- पोषक। इह- अत्र। क्रतुम्- अस्मत्सङ्कल्पं सर्वभूतहिताख्यम्। विदः- जानीहि। विद ज्ञाने। ॥७॥

अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने। पूषन्निह क्रतुं विदः॥ १ ॥०४२ ॥०८

सूयवसम्- सस्यश्यामलम्। देशम्। अभि नय- अस्मान् अभितः प्रापय। अध्वने- मार्गे। नवज्वारः- नूतनसन्तापः। अनपेक्षितविघ्नः। न- मा भवतु ॥८॥

शग्धि पूर्धि प्र यंसि च शिशीहि प्रास्युदरम्। पूषन्निह क्रतुं विदः॥ १ ॥०४२ ॥०९

Dr. Ranganji

शग्धि- शक्तो भव। शक्लृ शक्तौ। पूर्धि- पूरय। पृ पालनपूरणयोः। यंसि- मामुपरतं कुरु। यम उपरमे। शिशीहि- मां सूक्ष्मं कुरु। शो तनूकरणे। उदरं प्रासि- मम उदरमपि पूरय। मम योगक्षेममपि वहेति भावः ॥९॥

न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि। वसूनि दस्ममीमहे॥ १ ॥०४२ ॥१०

पूषणम्- पोषकम्। न मेथामसि- न हिंसामः। मेथृ मेधाहिंसनयोः। सूक्तैः- शोभनोक्तिभिः। अभि- अभितः। गृणीमसि- स्तुमः। गृ शब्दे। दस्मम्- दर्शनीयं सूर्यम्। वसूनि- संपदः। ईमहे- प्रार्थयामहे ॥१० ॥

Dr. Rangani